वार्षिक 200/- रुपये | मार्च 2026 | वर्ष 28 | अंक 05 | पृष्ठ - 28 | मूल्य 20/-रु.

गोसम्पदा

गाय है व्यक्ति की जीविका का नैसर्गिक साधन

सम्पादकीय

गाय है व्यक्ति की जीविका का नैसर्गिक साधन

यथार्थ में गाय व्यक्ति की जीविका का नैसर्गिक साधन है। उसके दूध–दही और मल–मूत्र से निर्मित भोज्य पदार्थ, औषधियां, प्रसाधन, ईंधन, मनुष्य की जीविका के साधन तो हैं ही और धन प्राप्ति के स्रोत भी हैं। स्मरण रहे मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक सभी सोलह संस्कारों में उसके पंचगव्य की आवश्यकता अनिवार्य होती है। पंचगव्य के बिना कोई यज्ञ–अनुष्ठान आदि धार्मिक कार्य संपन्न नहीं किये जा सकते हैं, किन्तु अज्ञानतावश आज उसकी घोर उपेक्षा करने के साथ ही हत्या भी की जा रही है।

"वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना का अवलंबन करने वाले आध्यात्मिक राष्ट्र भारतवर्ष में यदि लोग बेजुबान व निरीह प्राणियों की हत्या करके उनका मांस भक्षण करते हैं तो बड़ी ही लज्जा के साथ लिखना–कहना पड़ रहा है कि ऐसे लोगों की आत्मा असंदिग्धरूप से संवेदनशून्य अथवा मर चुकी है, क्योंकि जो लोग दूसरे प्राणियों की पीड़ा को नहीं समझ सकते हैं वे सुखी और स्वस्थ कैसे रह सकते हैं?

स्वर्णिम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देखें तो गोमाता सृष्टि के प्रारंभ से ही पूज्यनीय–वंदनीय अभिनंदनीय रही है, और अभी भी है। वह वात्सल्य की प्रतिमूर्ति और वेद की ऋचाओं–सी पावन है। कहा गया है **"गावो विश्वस्य मातराः"** अर्थात् गाय किसी एक की मां नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व की मां है। उनकी ममता का आंचल संपूर्ण मानव जाति के लिए एक समान है। समभाव से वह सभी का अपने अमृतरूपी दुग्ध से सिंचन और पोषण करती हैं, उसके लिए हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सहित सभी मानवों में कोई भेद–भाव नहीं है, इसीलिए वे सभी की मां हैं। बावजूद इसके आज वर्तमान में गोहत्या के कारण उनके अस्तित्व पर ही आसन्न संकट दिखाई दे रहा है। अभी भी हम यदि नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ी के लिए गाय इतिहास की वस्तु हो जाएगी। इसीलिए अब मोदी सरकार का परम कर्तव्य है कि त्वरित राष्ट्रीय कानून बनाकर संपूर्ण देश में गोवंश–हत्या प्रतिबंधित कर भारत के माथे पर लगा गोहत्या का काला कलंक मिटाए।

वर्तमान में व्यक्ति इतना भोगवादी व स्वार्थी बन गया है कि वह उसी वस्तु की ओर आकर्षित होता है, जिससे उसे आर्थिक लाभ मिल सके। इस दृष्टि से आज गाय को लाभकारी प्राणी नहीं माना जा रहा है, जिसके करण कुछ स्वार्थी मतान्ध लोगों द्वारा गोहत्या की जा रही है। इन जटिल परिस्थितियों में यदि मनुष्य सुखी–संपन्न और स्वस्थ रहना चाहता है तो पुनः गाय–गोवंश के महत्व को स्थापित करना होगा। इसीलिए गोवंश संरक्षण–संवर्द्धन की दृष्टि से स्वाधीनता के पूर्व से ही गोहत्या रोकने के लिए अनेक बार बड़े–बड़े आंदोलन किये गये। साथ ही अनेक साधु–संतों और महापुरुषों ने इस यज्ञ (आंदोलन) में अपने प्राणों की आहुति भी दी। अभी भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद सहित अनेक सांस्कृतिक संगठन गोवंश–हत्या रोकने के लिए संघर्षरत हैं। दुर्भाग्य से गोहत्या–गोमांस भक्षण अभी भी जारी है, जो भारतमाता के ललाट पर कलंक है जिसका मिटाया जाना अनिवार्य है।

यदि सही अर्थों में विवेक और ज्ञानपूर्वक गोवंश की रक्षा व संवर्धन किया जाए और उसके दूध–घी व गोबर–गोमूत्र का सही उपयोग किया जाए तो दूध न देने वाली गाय भी इतना उत्पाद दे सकती है, जो उसके खाने पर होने वाले खर्च से भी अधिक लाभ दे सकता है, इसको व्यावहारिक स्तर पर प्रमाणित किया जा चुका है। इसीलिए गाय को भारतीय ऋषि–मुनियों ने केवल धार्मिक रूप से ही महत्वपूर्ण प्राणी नहीं माना, अपितु शरीर विज्ञान की दृष्टि व आर्थिक दृष्टि से भी गोमाता का दूध, दही, घी, गोमूत्र व गोबर अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हुए हैं। अतः गोवंश की रक्षा व संवर्धन के लिए आवश्यक है कि देश भर में पंचगव्य (विशेषकर गोबर–गोमूत्र) आधारित उत्पादों का व्यावसायिक उत्पादन प्रारंभ हो ताकि गोपालक को गोबर–गोमूत्र की भी उचित कीमत मिले और गोमाता को बचाया जा सके। सत्यतः गोमाता संपूर्ण मानव जाति का पालन–पोषण करने में सक्षम होने के साथ ही मनुष्य का कल्याण (मोक्ष) करने में भी समर्थ हैं।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 28 अंक-05 मार्च - 2026 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 20/-
वार्षिक : रु. 200/-
आजीवन : रु. 2000/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
गाय है सबकी और सभी गाय के	04
गोवंश नहीं तो हम भी नहीं	07
तमिलनाडु का भूतपांडी मंदिर	10
गर्भिणी और पंचगव्य रुग्णानुभव	12
गाय है मातृत्व शक्ति का प्रतीक	14
आईआईटी ने बांस, सरकंडा और गोबर की ईंट से बनाया घर	17
अखिल भारतीय गोभक्त महिला सम्मेलन संपन्न	18
केशवसृष्टि को मिला सम्मान	21
The Role of Cow Dung in Reducing Chemical Fertilizer Dependency	22
Cows on Urban Roads	24

दैवीय महापर्व नवरात्रि एवं नूतन वर्ष विक्रम संवत २०८३ और पावन पर्व रामनवमी की सभी को हार्दिक मंगलकामनाएं

गिरीश पंकज

गाय है सबकी और सभी गाय के

गाय को कुछ लोगों की जहरीली सोच ने साम्प्रदायिक बना दिया है। वस्तुतः गाय सबकी है और सभी गाय के हैं। ऐसा कौन होगा जिसने गाय का दूध न पीया हो। कभी दही न खाया हो। मठा न पीया हो या घी न खाया हो। खोये या मावे की बनी मिठाइयों का भी स्वाद सभी ने चखा होगा। हर धर्म के लोगों ने गाय के दूध से बनी चीजों का आनंद लिया है। गाय अपने इन्हीं बहुगुणों के कारण तो **गोमाता** कहलाती हैं। और इसे तो हमने **विश्वमाता** भी कहा है, किन्तु अब गाय को ले कर टुच्ची राजनीति हो रही है। उसे धार्मिक चश्मे से देखा जाने लगा है, जबकि होना यह चाहिए कि गाय जैसे सर्वाधिक उपयोगी जीव को बचाने के लिए सभी को एक साथ उठ खड़ा होना चाहिए, परन्तु ऐसा करने से कुछ लोगों की रोटी नहीं सिंक सकती। इसलिए देश में लगातार ऐसा वातावरण बनाया जा रहा है, जिससे गाय का सवाल साम्प्रदायिकता के दायरे में आ जाए और गौ–हत्या जायज करार दी जाए। यह कार्य ऐसे भारत देश में हो रहा है जो कभी ग्रामों और गायों का देश कहलाता था। अब तो गायें निरंतर घट रही हैं, क्योंकि वे कट रही हैं। आने वाले कुछ वर्षों में गायों की संख्या तेजी से घटेगी, तब हमारे सामने पछतावे के अलावा कुछ और नहीं बचेगा। यह कितने अफसोस की बात है कि लोग गे (समलैंगिक) के अधिकारों की बात कर रहे हैं और गाय के जीने का अधिकार भी छीन रहे हैं।

वस्तुत: गाय सबकी है और सभी गाय के हैं। ऐसा कौन होगा जिसने गाय का दूध न पीया हो। कभी दही न खाया हो। मठा न पीया हो या घी न खाया हो। खोये या मावे की बनी मिठाइयों का भी स्वाद सभी ने चखा होगा। हर धर्म के लोगों ने गाय के दूध से बनी चीजों का आनंद लिया है। गाय अपने इन्हीं बहुगुणों के कारण तो गोमाता कहलाती हैं।

कई बार मैं सोचता हूँ कि बहुउपयोगी गाय के प्रति हमारे मन में आदर का भाव आखिर जागता क्यों नहीं? हम लोग क्या इतने प्रगतिशील हो गए हैं कि कुत्ते तो शान से पालेंगे, मगर गाय के नाम पर नाक–भौ सिकोड़ेंगे? मैंने देखा है अनेक घरों में लोग बड़े चाव से कुत्ते पालते हैं। उसे घुमाते हैं, किसी काम में न आने वाले उसके मल को भी साफ करते हैं। उसे अपने बिस्तर पर सुलाते हैं। कुत्ता मालिक को प्रेम से चाटता है। कभी–कभी उनको या पड़ोसियों को भी काट लेता है। फिर भी वे कुत्ते को गले से लगाए रखते हैं। यही लोग गाय को पालने के नाम पर बिदक जाते हैं। कुत्ते के मल को वे सह लेते हैं मगर गाय के गोबर से उनको एलर्जी हो जाती है। गौ–पालन उन्हें सिरदर्द लगता है।

यह एक बीमार मानसिकता बन गई है और यह मानसिकता गाँवों में भी विकसित हो रही है। वहाँ का नौजवान शहर में आकर मजदूरी कर लेगा। कहीं चपरासी हो जाएगा। कहीं ठेला लगा कर फल–सब्जी बेच लेगा, मगर अपने गाँव में रह कर न वह खेती करना चाहता है, न गौ–पालन करना। यही कारण है कि उपेक्षित गायें कसाईखाने के हवाले कर दी जाती हैं। वह गाय जो किसान का जीवन सँवार सकती है, सँवारती रही है। ऐसी गाय को वह कसाइयों को बेच देता है, चंद पैसों के लालच में। वह ऐसा इसलिए करता है कि उसे पता नहीं कि गाय का गोबर और मूत्र कितना लाभदायक है। उसका संचय करके बाजार में बेचे तो दूध से ज्यादा कमाई कर सकता है, लेकिन हमारे गाँवों के किसानों में अभी वैसी चेतना विकसित नहीं हो सकी है। लेकिन जो चेतनावान हैं, समझदार हैं, वे अपनी बूढ़ी गायों के गोबर–मूत्र का संचय कर के बायोगैस भी बना लेते हैं और उसे बेचकर लाभ भी कमा लेते हैं, परन्तु ऐसे लोग कम हैं। इसके लिए जरूरी है कि एक अ–सरकारी अभियान चले और गाँव –गाँव में जाकर गौ–पालन के महत्व को बताया जाए। गौ–विज्ञान के क्षेत्र में इस देश में कुछ लोग गंभीरतापूर्वक काम कर रहे हैं। उनका यह दायित्व है कि समाज में गौ–चेतना विकसित करने के लिए समर्पित अभियान चलाएँ। आज नहीं तो कल लोग गाय के महत्व को समझेंगे।

जरूरी है कि एक अ–सरकारी अभियान चले और गाँव –गाँव में जाकर गौ–पालन के महत्व को बताया जाए। गौ–विज्ञान के क्षेत्र में इस देश में कुछ लोग गंभीरतापूर्वक काम कर रहे हैं। उनका यह दायित्व है कि समाज में गौ–चेतना विकसित करने के लिए समर्पित अभियान चलाएँ।

यह संतोष की बात है कि इस देश में अनेक मुस्लिम बंधु गौ–रक्षा के कार्य में लगे हुए हैं। **मुस्लिम गौरक्षा मंच** जैसी संस्थाएँ सक्रिय हैं। कुछ मुसलमान बूढ़ी गायों की देख–रेख कर रहे हैं। एक मुसलमान युवक फैज़ खान तो एक उपन्यास **एक गाय की आत्मकथा** को पढ़कर प्रेरित होने के बाद देशभर में घूम–घूम कर गौकथा ही कर रहा है। रायपुर में रहने वाले मुज़फ्फर अली जैसे उनके अनेक मुस्लिम साथी गौ प्रेम से भरे हुए हैं और तन–मन –धन से गौरक्षा का कार्य कर रहे हैं। ये लोग सबको बताते हैं कि गाय काटने की नहीं, पालने की चीज है। उसके पालने से नुकसान नहीं होगा, फायदा ही होगा।

गाय के मामले में एक बड़ा भ्रम और है, जिसे दूर करने की और समझने की आवश्यकता है। अकसर आम लोग जर्सी गाय और देसी गाय में कोई खास अंतर नहीं कर पाते। कुछ गौशालाओं में जाने पर मैंने देखा कि वे (सुअर के जींस से विकसित) जर्सी गायों को पाल

रहे हैं क्योंकि वे दूध अधिक देती हैं। शोध कर्ताओं ने ये साबित कर दिया है कि जर्सी गायों के दूध में वो गुणवत्ता है ही नहीं, जो देसी गायों के दूध में है। जर्सी गायों का दूध, मूत्र और गोबर देसी गायों के दूध, मूत्र और गोबर जैसा लाभकारी नहीं है। फिर भी लोग समझते नहीं और समझाने पर कहते हैं, गाय–गाय सब एक हैं। जर्सी गायों की संख्या बढ़ने के कारण भी हमारी देसी गायें बेकार हो रही हैं और कसाईखानों तक पहुँच रही हैं।

यह माना कि हमारी कुछ देसी गायें कमजोर हैं। दूध कम देती हैं लेकिन उनके मूत्र और गोबर से हम अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। क्योंकि वे दवा बनाने के काम में आते हैं। कुछ लोग इस काम में लगे हुए हैं। गोमूत्र और गोबर आदि से जो खाद बनती है उससे धरती बेहद उर्वरा हो जाती है। देसी गायों के गोबर–गोमूत्र के उपयोग से जल स्तर भी अच्छा रहता है। जहाँ गायें नहीं होती, वहाँ जलस्तर भी कम हो जाता है। जहाँ गायें भरपूर होती हैं, वहाँ जलस्तर उन्नत होता है। यह कोई कपोल–कल्पित बात नहीं, वरन वैज्ञानिक शोध के आधार पर कहा जा रहा है। मगर दिक्कत यही है कि हम जिस समाज में रह रहे हैं, वह विस्मरण रोग से ग्रस्त हो चुका है। उसे पश्चिम की संस्कृति और जीवन–शैली ही अच्छी लगती है। इसलिए उसकी भाषा विदेशी, उसका रहन–सहन विदेशी और उसकी गाय भी विदेशी होती जा रही है। उसे कुत्ता भी विदेशी नस्ल का चाहिए। यही कारण है कि समाज का स्वास्थ्य गिर रहा है। लोग तरह–तरह के रोगों से ग्रस्त होते जा रहे हैं। अब तो हम ऐसे खतरनाक साम्प्रदायिक समय में आकर खड़े हो गए हैं कि अगर भूले से भी बच्चों के कोर्स में गाय का विषय रख दिया गया तो कुछ बंदे चिल्लाने लगेंगे कि यह क्या हो रहा है? साम्प्रदायिकता फैलाने की कोशिशें हो रही हैं। गायों का जिक्र होगा तो उसकी महिमा भी गाई जाएगी। वेद–पुराणों में जो गौ–महिमा वर्णित है, उसके बारे में भी बताया जाएगा, मगर यह कुछ लोग बर्दाश्त नहीं करेंगे क्योंकि गाय उनके लिए खाने की "वस्तु" है, श्रद्धा की नहीं। भारत का यह पतन इसलिए हुआ कि वह गाँव से कट रहा है, अपनी मिट्टी से दूर होता जा रहा है। अपनी संस्कृति उसे बेकार लगने लगी है। बाजारवाद ने उसे स्वार्थी और निर्मम बना दिया है। इसीलिए तो अब दूध में मिलावट हो रही है। नकली दूध बनाया जा रहा है।

अनेक ऐसे परिवार मैंने देखे हैं जो गौ–मांस खाने के मामले में उदार होकर बातें करते हैं। गाय या गौ–मांस खाना कोई बहुत बड़ी प्रगतिशीलता हो, आधुनिकता हो। बेशक हमें आधुनिक होना है, मगर कैसा आधुनिक? वो जो सभी जीवों से प्यार करता है, उनकी जान बचाता है। जो जीवों का साम्प्रदायिक इस्तेमाल नहीं करता। जो छुआछूत से दूर है। जो सर्वधर्म सद्भाव का पालन करे, वो है प्रगतिशील। गौ–मांस खाना प्रगतिशीलता नहीं, पागलपन है और अपने को बीमार करने की मूर्खता है। जब आदमी बहुत बीमार हो जाता है तब वह डॉक्टर के पास जाता है तो डॉक्टर भी यही सलाह देता है कि बंधु, मांसाहार बंद करो। मांसाहार वैसे भी सेहत के लिए बहुत हानिकारक है। और गौ–मांस तो न सेहत के लिए ठीक है और न सामाजिक अर्थशास्त्र के लिए उपयुक्त है। देसी गायों का उन्नयन हो, उसका संरक्षण–संवर्द्धन हो, उसकी नस्ल उनन्त हो। इस दिशा में काम करके हम न केवल गाय को बचाएँगे, वरन् गाँवों को भी बचाएँगे और गाँव की खेती को भी जैविक बना कर देश के स्वास्थ्य को बेहतर कर सकेंगे।

हरीशंकर दीक्षित (पथिक)

गोवंश नहीं तो हम भी नहीं

हम इतने निष्ठुर और संवेदनहीन क्यों हो गये हैं? इसका उत्तर भी प्रायः समस्त बुद्धिजीवी और बुद्धिशील जानते हैं, किन्तु कोई भी सत्य को स्पष्ट करते हुए उसे दूर करने की बात नहीं करता है।

किसी भी समस्या के निदान के लिये या संकट को समाप्त करने के लिये उसके उत्पन्न होने के कारणों को जानना आवश्यक है। जब तक हम उसके कारणों को जाने बिना उसे दूर करने का प्रयास करेंगे तब तक हमें उसमें सफलता नहीं मिलेगी। हमारे ऐसे प्रयास पौधों के मूल में पानी न देकर उसके पत्तों पर छिड़काव करने के समान ही निरर्थक सिद्ध होंगे।

आज हमारे लोकमंगलकारी, **''सर्वदेवमय और मातृ–पितृवत''** आदरणीय गोवंश पर ऐसा गहन भीषण संकट छाया है कि उसका अस्तित्व समाप्त होने की स्थिति बनती जा रही है। विडम्बना यह है कि हम इस संकट के उत्पन्न होने के कारणों को भली–भाँति जानते हुए भी उसे दूर करने के सार्थक प्रयास करने के स्थान पर केवल खानापूर्ति ही कर रहे हैं। हमारे राजनेता और बुद्धिशील ही नहीं, हमारे शीर्षस्थ धर्माचार्य तक पौधों पर पानी छिड़कने जैसा कार्य करते हुए अपने कर्तव्य को पूर्ण मान लेते हैं। गोवंश हमारे ही द्वारा उपेक्षित –तिरस्कृत होकर कलपता– सिसकता मारा–मारा फिरता दिन– प्रतिदिन विलुप्ति की कगार तक पहुँचाया जा रहा है। आजादी के साथ ही इस पर प्रारम्भ हुआ संकट आज इतना गहन हो चुका है कि यदि उसे दूर नहीं किया गया तो हमारी भावी सन्ताने इसके दर्शन वैसे ही करेंगी जैसे हम **शिवालयों में नन्दी** के करते हैं। विद्यालयों में लुप्त हो चुकी प्रजाति के रूप में उसका इतिहास दो चार पंक्तियों में हमारी भावी सन्तति को पढ़ाया भी जा सकता है।

प्रश्न उठता है कि आदिकाल से मनुष्य की आजीविका का मूलाधार ''सर्वदेवमय'' रूप में प्रतिष्ठित और **''मातृ–पितृवत''** आदरणीय हमारे परिवार का यह महत्वपूर्ण घटक हमारे ही द्वारा उपेक्षित–तिरस्कृत करके बहिष्कृत कर विलुप्ति की कगार पर क्यों ठेला–ढकेला जा रहा है? हम इतने निष्ठुर और संवेदनहीन क्यों हो गये हैं? इसका उत्तर भी प्रायः समस्त बुद्धिजीवी और बुद्धिशील जानते हैं, किन्तु कोई भी सत्य को स्पष्ट करते हुए उसे दूर करने की बात नहीं करता है। बुद्धिजीवियों की जीविका का आधार बुद्धि होने के कारण वे लोग आम जनता की रुचि के विपरीत कुछ भी नहीं कहते। बुद्धिशील जानते हैं कि सत्य कहने पर सामान्य जनता जो कम परिश्रम अधिक प्रतिफल पाकर सुख –सुविधाओं का भोग कर रही है; वह उन्हें अपमानित तक कर सकती है। राजनेता इसलिये उदासीन हैं कि ऐसा करने से श्रमिक, किसानों सहित अन्य उद्यमियों का समर्थन उन्हें नहीं मिलेगा। इसलिये यह सभी केवल **गोसम्पदा** के उपयोग की ही बात करते हैं। गोशक्ति के उपयोग की बात भूलकर भी नहीं कहते हैं। यही दशा हमारे धर्माचार्यों की भी है, जिन पर मनुष्यों को गोवंश के महत्व और महत्ता का उपदेश देते रहने का दायित्व है।

पश्चिमी क्षितिज की मशीन आधारित उद्योगों की आकर्षक लालिमा की चकाचौंध से विवेकहीन होकर हमारा देश भी अन्धों के समान तीव्र आर्थिक विकास की दौड़ में दौड़ने को विवश हुआ। इस दौड़ के विनाशकारी परिणाम को जानते हुए भी हम सब **''सतत् प्राकृतिक विकास''** की अपने पूर्वजों की अवधारणा को तिलांजलि देकर अपनी ही भावी सन्तानों के जीवन में विष घोलने का कार्य करते जा रहे हैं। हम निरन्तर मशीनों पर आश्रित होकर परिश्रम विमुख होकर अपना समय आमोद–प्रमोद में बिताते हैं। आज का मनुष्य औसतन आठ–दस घंटे मोबाइल देखता हुआ मनोरंजनी मुद्रा में व्यतीत करता है। गोवंश का पालन–पोषण कर उसके आधार पर कृषि तथा उद्योग धन्धे करना आर्थिक दृष्टि से कम लाभकारी होने के कारण कौन करना चाहेगा? मशीनों द्वारा कृषि तथा उद्योग धन्धों में समय और परिश्रम दोनों अपेक्षाकृत कम लगता है और गोवंश के पालन–पोषण में लगने वाला श्रम भी नहीं करना पड़ता है। इसी कारण हमारा गोवंश हमारे लिये अनुपयोगी सिद्ध होकर उपेक्षित–तिरस्कृत मारा–मारा फिरता हुआ अपना अस्तित्व खोता जा रहा है।

जिन धरती, प्रकृति और गो प्रेमियों ने इस समस्या के समाधान के लिये अपने स्तर पर कार्य करते हुए परम्परागत कोल्हुओं और हलों में सुधार कर गोवंश की उपयोगिता बनाये रखने का प्रयास किया भी है उन्हें न तो हमारी सरकारों ने प्रश्रय दिया और न ही कृषकों तथा लघु–कुटीर उद्यमियों ने उन्नत कृषि यन्त्रों को अपनाया। यहाँ तक कि ट्रैक्टर जैसी बैलचालित संरचना तक को नकार दिया गया। यदि कृषक बैलचालित पाँच फालों वाले हल को अपनाते तो इसे उन्नत कर और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता था। किसानों और सरकार दोनों द्वारा हतोत्साहित होने के कारण उत्तर प्रदेश के कानपुर में दुर्गा इन्जीनियरिंग प्रतिष्ठान और मध्य प्रदेश के भी ऐसे ही एक प्रतिष्ठान को यह योजना रोक देनी पड़ी। सम्भवतः सरकार ने बाजार के दबाव में और किसानों ने अल्प समय और परिश्रम में अधिक कार्य करने के लाभ में गोवंश हितैषी तकनीशियनों के इस लोकहितकारी कार्य की उपेक्षा की।

हमारे देश के प्रमुख धर्माचार्य

शंकराचार्य माने जाते हैं। आदि शंकराचार्य से प्रारम्भ यह उपाधि उन तपस्वी डण्डी–सन्यासियों में से सर्वश्रेष्ठ योग्य–पात्र को दी जाती रही है, जो पदात् भ्रमण करते हुए ग्राम–ग्राम जाकर लोगों को सृष्टि रचना में गोवंश के महत्व और महत्ता का ज्ञान उपदेश रूप में देते थे। आज हमारे शंकराचार्य अपने दायित्व का कितना और किस प्रकार निर्वाह करते हैं, यह सर्वविदित है। इनमें से एक के हठ के कारण सनातन धर्म की जो दुर्गति हो रही है वह हमारे सामने है। आज दण्डी सन्यासियों के दर्शन तक दुर्लभ हैं। तात्पर्य यह है कि वैभव विलासमद से आज हमारा कोई भी वर्ग अछूता नहीं है। धर्म के नाम पर होने वाली उपदेश– कथायें तक वातानुकूलित विशाल कक्षों में होने लगी हैं। हर ओर मिथ्याडम्बरों का बोलबाला है। कोई भी उपदेशक धर्म की सटीक व्याख्या करता हुआ धर्म के मर्म का वर्णन करता नहीं दिखायी देता है।

''कर्मफल भोगना ही पड़ता है।'' यह सृष्टि नियन्ता का मनुष्य के लिये विधान है। अन्यान्य प्राणियों की बुद्धि उन्नतशील न होने के कारण वे अपने धर्म अर्थात् कर्तव्यों का उल्लंघन नहीं करते। केवल मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसे ईश्वर ने अपने सृष्टिकौतुक की निरन्तरता के लिये प्रकृति के सहयोगी के रूप में उत्पन्न कर उसे इस कार्य के लिये उन्नतशील बुद्धि दी है। मनुष्य अपनी बुद्धि का दुरुपयोग न करे इसके लिये ही **कर्मफल भोग सिद्धान्त** निर्धारित किया गया है जो ईश्वरीय विधान है। धर्माचार्य–उपदेशक आदिकाल से ही मनुष्यों को उसके कर्तव्यों अर्थात् धर्म का ज्ञान कराते रहे हैं। वर्तमान मशीनी युग में मनुष्य प्रमादवश अपने धर्म से विरत होकर इसके आधार पर जीवनयापन नहीं कर रहा है।

मनुष्य की इस धर्मविमुखता का दुष्प्रभाव हमारी धरती की शिव–सुन्दर सृष्टि पर घातक रूप से पड़ रहा है। प्रकृति का शोषण नोच–खसोट की सीमा पारकर आगे बढ़ रहा है। प्रकृति का सहचर गोवंश हमारे द्वारा ही उपेक्षित– तिरस्कृत होकर कल्पता सिसकता विलुप्ति की ओर ठेला जा रहा है। विडम्बना यह है कि हम इसके प्रति निरन्तर संवेदनहीन होते जा रहे हैं। जो लोग इसके दुख से दुखी होकर प्रयत्नशील हैं उनका प्रयास पत्तों में जल छिड़ककर पौधों को सींचने जैसा ही है। हम भूल गये हैं कि यह हमारे परिवार का मातृ–पितृवत आदरणीय घटक है। यह हमारे ही नहीं धरती की समस्त जैविक सृष्टि का मूलाधार है। इसकी शक्ति– सम्पदा हमारे लिए वरदान है।

ऐसा प्रतीत होता है कि हम चेतेंगे नहीं और अपने अधर्माचार द्वारा गोवंश को दुखी करते हुए धरती की शिव–सुन्दर सृष्टि के विनाश का कारण बनकर ही मानेंगे। हमारे इस दुष्कृत्य का जो दण्ड हमें मिलेगा उसे जानते हुए हम उससे बचने के लिये ईश्वर तक को उत्कोच देकर दण्ड रूपी कर्मफल से बचने का प्रयास करते हैं। विचार कीजिये, क्या जीवित नन्दी की उपेक्षा–तिरस्कार कर उसे पीड़ित–प्रताड़ित कर शिवालय में पशुपतिनाथ के वाहन पत्थर के नन्दी को स्नान कराकर पूजा करने वालों पर पशुपतिनाथ कृपा कर उनके पापों का

प्रच्छालन करेंगे? क्या हमारे धर्माचार्यों का उपदेश **''एक लोटा जल, समस्त समस्याओं का हल''** यहाँ लागू हो सकता है? क्या पापनाशिनी माता गंगा जो पापियों के शरीर के स्पर्श से अपवित्र होकर गोमाता के खुरों की धुली उड़कर पड़ने से ही पवित्र होती हैं; वह हमारे द्वारा गोवंश के प्रति किये जाने वाले अत्याचाररूपी पापों को धो देंगीं? यदि ऐसा है तो हमें अपने पूर्वजों की मुक्ति के लिये पिण्डदानादि करने की आवश्यकता ही क्या है, क्योंकि आज के समय में दाह संस्कार के पश्चात् मृतक की अस्थियों को गंगा माता की धारा में निर्धन व्यक्ति भी प्रवाहित करते हैं।

उपरोक्त लेख से तात्पर्य यह है कि कर्मफल भोगना ही पड़ेगा। हमारे धर्मोपदेशक मानव धर्म की व्याख्या कर दण्डी सन्यासियों की भाँति आचरण करते हुए मनुष्यों को उपदेश देकर सत्य मार्ग का दर्शन करायें। यह ईश्वरीय इच्छा है जो सृष्टि की कल्पान्त तक निरन्तर गतिशीलता बनाये रखने के निमित्त ही है। अन्यथा धरती की शिव–सुन्दर सृष्टि का विनाश हमारे अधर्माचरण के कारण निकट भविष्य में अवश्यम्भावी है।

पूजा पाराशर (कवयित्री, स्वतंत्र लेखिका)

तमिलनाडु का भूतपांडी मंदिर

"यत्किंचित्कुशलं लोके
गवां तस्मात् प्रजायते।"

(मनुस्मृति, ११.७६)

अर्थात् 'संसार में जो कुछ भी कल्याणकारी या शुभ है, वह सब गोमाता से ही उत्पन्न होता है।' भूतपांडी मंदिर, नागरकोइल, कन्याकुमारी (तमिलनाडु) के केंद्र में स्थित एक प्राचीन और रहस्यमयी मंदिर है। यह एक शिलाखंड काटकर बनाया गया गुफा मंदिर है। वास्तुकला और मूर्तियों के आधार पर यह शिला को काटकर निर्मित गुफा मंदिर सातवीं शताब्दी का माना जाता है। यह मंदिर न केवल अपनी वास्तुकला, अपितु अपनी अनूठी लोककथाओं और आध्यात्मिक महत्व के लिए भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

भारतीय प्राचीन मंदिरों का संबंध कहीं–न–कहीं गोमाता से अवश्य ही रहा है। मंदिरों से जुड़ी अनेक गौ–कथाएँ सदैव प्राप्त होती रही हैं, उनमें ही एक बहुत ही सुंदर और भावुक "गौ–कथा" भूतपांडी मंदिर से जुड़ी हुई है। स्थानीय लोग इस कथा को बड़े चाव से सुनाते हैं और यह कहानी इस मंदिर की स्थापना के मूल कारणों में से एक मानी जाती है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, प्राचीन काल में जहाँ आज मंदिर स्थित है, वह क्षेत्र घने जंगलों (झाड़ियों) से घिरा हुआ था। वहाँ पास के गाँव का एक चरवाहा अपनी गायों को चराने के लिए ले जाता था। उस चरवाहे ने ध्यान दिया कि उसकी एक सबसे अच्छी गाय शाम को घर लौटने के बाद दूध नहीं देती। उसका थन पूरी तरह खाली रहता है। चरवाहे को लगा कि शायद कोई दूध चुरा रहा है या बछड़ा सारा दूध पी जाता है।

एक दिन चरवाहे ने छिपकर गाय का पीछा किया। उसने देखा कि गाय जंगल के एक विशेष स्थान पर, जहाँ घनी झाड़ियाँ और पत्थर थे, जाकर खड़ी हो गई। आश्चर्य की बात यह थी कि जैसे ही वह उस

स्थान पर पहुँची, उसके थनों से अपने आप दूध की धारा बहने लगी और वह दूध एक पत्थर (जो झाड़ियों में छिपा हुआ था) पर गिरने लगा। चरवाहा यह देखकर दंग रह गया। उसने तुरंत गाँव वालों और तत्कालीन राजा (पांड्य वंश) को सूचित किया। जब उस स्थान की सफाई की गई तो वहाँ एक **'स्वयंभू शिवलिंग'** प्रकट हुए।

गाय ने स्वयं अपना दूध चढ़ाकर भगवान शिव को प्रकट किया था, इसलिए उस स्थान को अत्यंत पवित्र और दिव्य माना गया। कुछ लोक कथाओं में कहा जाता है कि वह गाय कोई साधारण गाय नहीं, अपितु साक्षात कामधेनु का अंश थी या भगवान के किसी गण (भूत) द्वारा निर्देशित थी। इसी दिव्य घटना के कारण मंदिर का नाम और महत्व बढ़ गया। भक्तजन इसी श्रद्धा और भक्ति–भाव से यहाँ प्रार्थना और पूजा करते हैं कि भगवान शिव भक्ति के भूखे हैं, और निस्वार्थ भाव से किया गया अर्पण (जैसे गाय का दूध) उन्हें प्रसन्न करता है।

यह भी माना जाता है कि पांडव अपने अज्ञातवास के समय जब दक्षिण भारत आए थे तब यहाँ भीम (जिन्हें कभी–कभी 'भूत' के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि उनकी शक्ति अलौकिक थी) ने भगवान शिव की आराधना की थी। **यहाँ 'भूत' का अर्थ प्रेत–आत्मा नहीं, अपितु 'पंचभूत' (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) या भगवान शिव के गणों से है।** लोककथाओं के अनुसार, इस स्थान पर शिव के गणों ने पहरा दिया था, इसलिए इसका नाम **भूतपांडी** पड़ा।

इतिहास और शिलालेखों के अनुसार इस मंदिर का निर्माण 'पांड्य' वंश के राजाओं ने कराया था, अतः इस स्थान का नाम संगम काल के राजा **'ओलैयूर तंद भूथ पांड्यन'** के नाम पर रखा गया है। 7वीं शताब्दी का यह मंदिर दर्शनार्थियों को न मात्र आध्यात्मिक एवं पौराणिक संबंध हेतु जोड़ता है, अपितु इसकी वास्तुकला भी आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। इसकी वास्तुकला मुख्य रूप से द्रविड़ शैली की है, जिसमें पांड्य और बाद में त्रावणकोर के राजाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है। मंदिर के पत्थर की नक्काशी और स्तंभों पर बने चित्र, चोल और पांड्य काल की कला को दर्शाते हैं।

भूतपांडी मंदिर अपनी दिव्यता और विशेष विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। **यहाँ मुख्य देवता भगवान शिव हैं, जिन्हें 'भूतपांड्येश्वर' के रूप में पूजा जाता है, वहीं 'श्री शिवगामी अम्मन' बहुत शक्तिशाली देवी के रुप में पूजी जाती हैं।** कन्याकुमारी जिले में होने के कारण इसे आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र भी माना जाता है। यहाँ भक्तजन शांत वातावरण व दिव्य ऊर्जा का अनुभव करते हैं। **"प्रदोषम" पूजा** के लिए यह बहुत प्रसिद्ध है, जहाँ हजारों भक्त शिव की कृपा प्राप्त हेतु एकत्रित होते हैं। गुफा रूप में गर्भगृह एक चट्टान काटकर बनाया गया है, अतः गर्भगृह के चारों ओर कोई परिक्रमा मार्ग नहीं है। मंदिर के गोपुरम और गर्भगृह की बनावट ऐसी है कि वह प्राचीन काल के इंजीनियरिंग कौशल को भी दर्शाती है।

ब्रिटिश काल के दौरान लिखे गए **'त्रावणकोर स्टेट मैनुअल'** ऐतिहासिक दस्तावेज़ में कन्याकुमारी के महत्वपूर्ण मंदिरों और भूतपांडी के इतिहास का उल्लेख मिलता है। दक्षिण भारत के अधिकांश मंदिरों का अपना एक **'स्थल पुराण'** होता है, जो ताड़ के पत्तों या स्थानीय धार्मिक लिपियों में वहाँ की महिमा बताता है, उसमें भी मंदिर का पूर्ण वर्णन मिलता है। साथ ही, पांड्य राजाओं द्वारा शिव भक्ति के संदर्भ में इस क्षेत्र का वर्णन कई तमिल काव्यों में मिलता है। भारत भूमि, जहाँ की संस्कृति, संस्कार, दिव्यता, आध्यात्मिकता और भारत भूमि का सौंदर्य संपूर्ण विश्व में उसी दिव्य रंगीन मोर पंख के समान शोभायमान है, जिस प्रकार भगवान कृष्ण के मुकुट पर सुशोभित मोर पंख।

जय गोमाता की!! जय भारत भूमि!!

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

पंचगव्य आयुर्वेद के विलक्षण प्रभाव का उपयोग समाज को भी हो, यह कामना करते हुए दोनों माता-पिता ने बताई हुई सभी सूचनाओं का व्यवस्थित पालन किया, उसका प्रभाव भी उन्होंने अनुभव किया।

गर्भिणी और पंचगव्य रुग्णानुभव

गो विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के दवाखाने में सलाह लेने ब्रम्हपुरी गाँव से एक सज्जन आए थे। उनकी पत्नी साढ़े चार माह की गर्भिणी थीं। गर्भ में जुड़वा बच्चे पल रहे थे। लगभग 23 साल की छोटे कद की महिला थी। गर्भिणी अवस्था ध्यान में आई उस समय डेढ़ माह हुआ था। गर्भ में दो बच्चे पल रहे हैं पता हुआ। उसके बाद तीन माह में पुनः परीक्षण में ध्यान में आया की एक बच्चा ठीक से नहीं बढ़ रहा है। उसका वजन अपेक्षा से कम बढ़ रहा है। अतः माँ को कुछ औषधि एवम् सलाह दी गई। खाने-पीने का ज्यादा ध्यान देने के लिए बताया, साथ ही अतिश्रम से भी बचने के लिए कहा गया। महिला गृहिणी होने से उसे यह संभालना आसान था। एक माह बाद-चौथे माह में पुनः परीक्षण किया गया। इस बार भी दूसरे बच्चे का वजन अपेक्षा से थोड़ा कम ही बढ़ा था। अब घर में चिंता बढ़ने लगी। अतः उन्होंने अलग-अलग जगह से जानकारी लेना प्रारंभ की। दूसरे प्रसूतितज्ञों का भी मत लिया गया, किसी ने उन्हें यह बच्चे गिराने की सलाह भी दी। अब सब लोग अतिचिंता में आए। किसी परिचित व्यक्ति ने पंचगव्य विषय की जानकारी उन्हें दी। अतः सर्वप्रथम दूरध्वनि से ही सब बताया गया। उस समय ''कोरोना काल'' चल रहा था। अतः रुग्णा को नागपुर बुलाना डबल खतरा था। होने वाले बच्चे के पिताजी स्वयं रिपोर्टस् लेकर आए। पंचगव्य आयुर्वेद के माध्यम से हम क्या कर सकते हैं उस पर चर्चा में उन्हें माँ को तैलाभ्यंग – शरीर में औषधि तेल लगाना, सेवन करने हेतु पंचतिक्त घृत, फलघृत, नारायण तैल एवम् गर्भपोषक औषधि विधिवत् लेने के लिए बताया। आहार-विहार की ध्यान रखने लायक बातों को भी बताया। नाभीपूरण, पादाभ्यंग गोघृत द्वारा करने के लिए भी बताया। एक महिने बाद पुनः

परीक्षण हुआ। अब दोनों गर्भ का वजन लगभग एक जैसा ही बढ़ा था। उसके बाद नववें माह तक दोनों का वजन बढ़ता तो रहा लेकिन दोनों में अंतर बना ही रहता था। अब डॉक्टर्स को छोटे गर्भ के पूर्ण काल (9 माह 9 दिन) तक जिंदा रहने की चिंता हो रही थी। उन्हें यह आशंका हो रही थी कि अगर छोटा बच्चा किसी भी कारणवश अतिअस्वस्थ स्थिति में जाता है तब तंदुरुस्त बच्चे को भी जबरन अपूर्ण दिन में गर्भाशय से बाहर निकालना पड़ेगा। भोजन में गाय के घी का सेवन, गर्भपोषक औषधि, गाय का दूध आदि सभी मात्रावत् सेवन कराया गया। स्वस्थ बच्चा अच्छे से बढ़कर पूर्ण दिन में छोटे भाई के साथ इस दुनिया में आया। अब सब लोक निश्चिंत हुए। छोटा बच्चा कुछ ज्यादा ही छोटा रह गया था। उसका पूर्ण समय गर्भ में जीवित रहना ही अत्यंत आवश्यक था। डॉक्टर्स ने पहले की उसकी अल्पायु की जानकारी सबको दे रखी थी। जन्म के बाद तीन घंटे तक वह जीवित था।

अब घर के लोग एवम् स्वयं माता–पिता को यह लगता है कि गर्भावस्था के नौ महिनों में से आधा समय तो पंचगव्य चिकित्सा के पूर्व खत्म हो चुका था। लेकिन आधे समय में हम एक बच्चे को अच्छे से बढ़ा सके, अगर इसका उपयोग हम शुरू से करते तो दोनों बच्चों का पोषण अच्छे से होकर दोनों बच्चे आज जीवित रहते। अतः वे अपना अनुभव समाज तक पहुँचाने का कार्य भी कर रहे हैं।

गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के चिकित्सा का लाभ विदेश में भी एक भावी माता–पिता ले रहे थे। अब उन्होंने गर्भधारणा का विचार किया। पहले से ही कुछ गाय के घी से बनी औषधि का सेवन माता द्वारा किया जा रहा था। परीक्षण उपरान्त पता चला गर्भ में दो बच्चे पल रहे हैं। छः माह तक दोनों का पोषण अच्छा हो रहा था। जुडवा बच्चे होने के कारण उस देश की पध्दति के अनुरूप विशेष डॉक्टर्स उनकी देखरेख कर रहे थे। एक परीक्षण में ध्यान में आया कि एक बच्चे का बीच–बीच में ही रक्तप्रवाह रुक जाता है। हमें दूरध्वनि से ही त्वरित सूचना प्राप्त हुई। अब विदेश में तुरंत क्या मिल सकेगा? यह प्रश्न था। ऑनलाइन ढूंढ़ने से अर्जुन की गोली एवम् घी ढूंढ़ा गया। हमें भारतीयवंश के स्वस्थ गाय से प्राप्त दूध का देशी पध्दति से बना गाय का घी आवश्यक था। उस घी से आयुर्वेदोक्त पद्धति से बना ''अर्जुन घृत'' तुरंत तो वहाँ उपलब्ध नहीं हो रहा था। अतः अर्जुन गोली को गाय के दूध के साथ लेने के लिए बताया गया। तुरंत दूसरे ही परीक्षण में रक्तप्रवाह में सुधार दिखने लगा।

गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार द्वारा बनाया गया अर्जुन घृत उनके परिवारवालों ने वहाँ पहुँचाने से तुरंत ही सेवन शुरू हुआ। अगले ही परीक्षण में रक्तप्रवाह में सुधार ध्यान में आया। डॉक्टरों के समूह की सोच थी कि इस घटना की शुरूवात होते ही कुछ दिनों में ही ऑपरेशन से बच्चों को निकालने की सोच वहाँ के डॉक्टरों ने सबको बताकर रखी थी। लेकिन गोघृत के विलक्षण गुणों के प्रभाव से खून का प्रभाव अच्छा होता रहा। परिणामस्वरूप बच्चों को अधिकतम समय माँ के गर्भ में रहने पर डॉक्टरों की पूरी टीम आश्चर्यचकित हुई। उनके कहने के अनुसार उनके पढ़े हुए विज्ञान के आधार पर बच्चों का इतने समय तक गर्भ में अच्छे से रह पाना नामुमकिन है। पंचगव्य आयुर्वेद की अन्य औषधि भी जैसे पंचतिक्त घृत, फलघृत, नारायण तेल, बलादि तेल, लघुसूतशेखर आदि मात्रावत् गर्भिणी को शुरू थी। अब दोनों बच्चे लगभग डेढ़ माह के हो चुके हैं। इन बच्चों के जन्म के समय की चुस्ती देखकर भी डॉक्टरों की टीम हैरान हुई। इतनी सब कठिनाइयों का सामना किए बच्चों का स्वास्थ्य स्तर देखते हुए वे आश्चर्य चकित हुए। पंचगव्य आयुर्वेद के इस विलक्षण प्रभाव का उपयोग समाज को भी हो, यह कामना करते हुए दोनों माता–पिता ने बताई हुई सभी सूचनाओं का व्यवस्थित पालन किया, उसका प्रभाव भी उन्होंने अनुभव किया।

अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार, नागपुर द्वारा संचालित महल एवम् 146 शिवाजीनगर, नागपुर स्थित पंचकर्म केन्द्र से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. विजय लक्ष्मी, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

गाय है मातृत्व शक्ति का प्रतीक

आज के आधुनिक युग में जहां हम लोग भौतिक सुख–सुविधाओं के पीछे भाग रहे हैं, वहीं गोमाता की सेवा का महत्व और भी बढ़ जाता है। गोसेवा का अर्थ केवल गाय को भोजन और पानी देना ही नहीं, बल्कि उनके संरक्षण, स्वास्थ्य और सम्मान की रक्षा करना है। भोर होते ही हमारी प्रिय गोमाता रंभाने लगती हैं..... "अंबा....''। यह ध्वनि ओंकार है। यह घर के प्रत्येक सदस्य के लिए जागने का संकेत है और गौपालक के लिए गाय का दूध दुहने की ओर भी इंगित करता है। सुबह–सुबह सबसे पहले गोमाता के दर्शन करने से ही दिन शुभ हो जाता है। यात्रा पर जाने से पहले गोमाता के दर्शन करने से यात्रा भी शुभ हो जाती है। जो गाय दूध नहीं देती या बूढ़ी और अपाहिज होती हैं, उनकी सेवा करना सबसे बड़ा पुण्य माना जाता है। बूढ़ी होने पर भी गाय हमें गोबर एवं गोमूत्र देती रहती हैं। उसका यदि ठीक से उपयोग किया जाए तो पर्याप्त धन प्राप्त होता है। अतः गाय कभी हमारे ऊपर बोझ नहीं बनती। इसलिए जिस प्रकार हम अपने बुजुर्गों की सेवा करते हैं, उसी प्रकार बुजुर्ग गाय की सेवा भी हमें करते रहना चाहिए। इससे न केवल हमारी आर्थिक क्षमता बढ़ेगी बल्कि हमें पुण्य भी प्राप्त होगा। गायों को खूंटे से बांधने की अपेक्षा उन्हें स्वतंत्र रूप से चरने और रहने के लिए स्थान देना चाहिए। कुछ अच्छे कर्म तनाव कम करते हैं, आत्मविश्वास बढ़ाते हैं और हमारे आसपास सकारात्मक ऊर्जा का एक सकारात्मक वातावरण बनाते हैं जो अंततः जीवन को बेहतर बनाते हैं। सभ्यता के आरंभ से ही मनुष्य गोमाता की सेवा करके समृद्धि, सुख–स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा और शुभता प्राप्त करता आया है। सनातन धर्म के अनुसार गोसेवा ही सच्ची ईश्वर की सेवा है। गोसेवा ग्रामीण आजीविका को मजबूत करती है। किसानों का समर्थन करती है और गाय– गोवंश आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती है। गाय से प्राप्त उत्पादों का उपयोग करने से रोजगार सृजित होता है और साथ

ही पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण भी होता है। भारतीय कृषि परंपरा सदियों से गोमाता–गोवंश पर आधारित रही है, क्योंकि गोवंश का गोबर और गोमूत्र जैविक खेती के लिए वरदान है। यह खेतों की उर्वरक क्षमता को बढ़ाते हैं और रसायनों से मुक्त अन्न प्रदान करते हैं। गोसेवा हमारी वैदिक विरासत और संस्कृति का अभिन्न अंग है। हमारे देश में गायों की न केवल रक्षा की जाती है बल्कि उनका आदर और पूजा भी की जाती है। हमारे वैदिक ग्रन्थों में कहा गया है कि सभी देवता गाय के शरीर में निवास करते हैं, इसलिए गाय को दिव्य माना जाता है और उसे माता के समान सम्मान दिया जाता है। गोमाता निस्वार्थता की आदर्श हैं। वे मानव सभ्यता को अनेक बहुमूल्य सेवाएं प्रदान करती हैं। गोसेवा केवल एक धार्मिक कर्तव्य नहीं बल्कि यह समाज और पर्यावरण दोनों के लिए आवश्यक है। गोसेवा करना हमारे संस्कार, आत्मिक चेतना और आस्था का प्रतीक है। सभी वैदिक ग्रंथ गोमाता की महिमा का बखान करते हैं और उनकी सेवा एवं संरक्षण का गुणगान करते हैं। महाभारत के अनुशासन पर्व 145 में कहा गया है, **"गाय मातृत्व शक्ति का प्रतीक है। जिस दिन संसार में गाय नहीं बचेगी, उस दिन यह संसार माता से वंचित हो जाएगा और इस प्रकार कोई अन्य जीव भी जीवित नहीं रह पाएगा।"** गोमाता की रक्षा ही धर्म की रक्षा है और धर्म की रक्षा से ही सृष्टि की रक्षा संभव है। बृहत् पाराशर–स्मृति में लिखा है–"घास चरने मात्र से गाय हमें दूध देती है। दूध से घी बनता है जिससे देवता तृप्त होते हैं। तो भला गाय की उपेक्षा कैसे की जा सकती है? उसके सान्निध्य मात्र से मनुष्य पवित्र हो जाता है। उसकी सेवा करने से असीम धन की प्राप्ति होती है और गायों का दान करने से स्वर्गलोक प्राप्त होता है। गाय से बढ़कर कोई धन नहीं है। समस्त देवता उसके शरीर के विभिन्न भागों में निवास करते हैं। भक्तिपूर्वक गाय की सेवा करने से भगवान हरि प्रसन्न होते हैं। उसका दूध मनुष्यों का पोषण करता है। ऐसी गाय भला

गोसेवा के लाभ

1. **धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व** – गोसेवा धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है क्योंकि गायों को पूजा जाता है और वह हमारे धार्मिक रीति–रिवाज का हिस्सा हैं।
2. **स्वास्थ्य लाभ** – गाय का घी, दूध और दही स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं।
3. **आर्थिक लाभ** – गायों से प्राप्त दूध और उससे बने उत्पादों से किसानों की आमदनी बढ़ती है।
4. **पर्यावरण संरक्षण** – गायों का गोबर और मूत्र जैविक खाद के रूप में उपयोग किया जाता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और रासायनिक खादों का उपयोग कम होता है।
5. **आध्यात्मिक और मानसिक शांति** – गौ सेवा से करुणा और संतोष का भाव बढ़ता है। गायों की देखभाल करके हम अहंकार को त्यागकर बिना किसी अपेक्षा के सेवाभाव करना सीखते हैं। निःस्वार्थ सेवा का यह रूप मनुष्य में गहरी करुणा का भाव उत्पन्न करता है।
6. **सुख और समृद्धि** – मान्यता है कि गोसेवा से माता लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और घर में सुख–समृद्धि आती है। कहा जाता है कि गाय को खिलाई गयी कोई भी चीज सीधे देवी–देवताओं तक पहुंच जाती है। इसलिए शास्त्रों में पहली रोटी गाय के लिए निकालने की बात कही गई है। गाय के लिए पहली रोटी निकालने से हमारे जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान हो जाता है और घर में खुशहाली आती है।

पूजनीय क्यों न हो?"

गोसेवा का अर्थ है मानव की सेवा करना। गाय की सेवा करना और उसे प्रतिदिन भोजन कराना एक पवित्र कार्य है। प्राचीन ग्रंथ, आधुनिक विज्ञान और सतत जीवन शैली सभी एक ही सत्य की ओर इशारा करते हैं। गोसेवा से व्यक्ति, समाज और ग्रह आदि सभी को लाभ होता है। गाय को गोमाता के रूप में पूजा जाता है जो सार्वभौमिक माता हैं और मानवता को शारीरिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय रूप से पोषित करती हैं। हिंदू धर्म में गोसेवा अहिंसा, करुणा और धार्मिक जीवन से गहराई से जुड़ी हुई है। नियमित गोसेवा विचारों, कार्यों और आसपास के वातावरण को शुद्ध करने में सहायक होती है। गोसेवा एक परम्परा ही नहीं बल्कि कृतज्ञता से भरी जीवन शैली है। गाय की रक्षा करके हम धरती, अपने स्वास्थ्य और अपने भविष्य की रक्षा करते हैं। जहां भी गाय रहती है, वहां का वातावरण शुद्ध हो जाता है। इसलिए गोपालन एक पुण्य कर्म है। गायों की सेवा करने से नकारात्मक कर्म कम होते हैं। पुराणों में गोधूलि वेला को भी महत्वपूर्ण माना गया है। यह समय तब होता है, जब गायें जंगल से घास चरकर वापस लौटती हैं। इस समय गाय के खुरों से उठने वाली धूल को पवित्र माना जाता है और यह समस्त पापों का नाश करती है। इसीलिए, गोधूलि वेला में गाय की पूजा करना और उसकी सेवा करना अत्यंत शुभ फलदायी होता है। गोसेवा को अपने दैनिक जीवन में शामिल करने के लिए घर में गौशाला होना आवश्यक नहीं है। यह हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। चाहे वह किसी पशु की देखभाल के लिए समय निकालना हो, नैतिक प्रथाओं का पालन करने वाले स्थानीय किसानों का समर्थन करना हो या गायों के आध्यात्मिक महत्व के बारे में अधिक जानना हो। हर छोटा कार्य अहमियत रखता है। इस प्रकार हम सभी गोमाता की सेवा और संरक्षण का संकल्प लें। स्वयं भी सेवा करें और समाज को भी इसके लिए प्रेरित करें। गोसेवा हमें **"वसुधैव कुटुंबकम्"** की भावना सिखाती है। गायों की सेवा करना दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रत्यक्ष मार्ग माना जाता है। गोमाता की सेवा करके हम स्वयं को ब्रह्मांड की प्राकृतिक लय से जोड़ते हैं और सभी जीवित प्राणियों के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं।

वन्दे गोमातरम्

- शोभाराम धेनुसेवक

विश्व की जननी विभव विस्तारिणी गोमातरम्।
शक्ति संतति सौख्य्य प्रद दुख हारिणी गोमातरम्।।

ईश की तू देन अनुपम वन्दनीया विश्व की।
निस्वार्थ निर्मल, लोक की उपकारिणी गोमातरम्।।

विश्व भी बनता नहीं तब, धेनु जो होती नही।
कह रहे हैं वेद वसुधा–धारिणी गोमातरम्।।

लोक में परलोक में भी तू सहायक बन रही।
है सिद्धियाँ तेरी सदा अनुसारिणी गोमातरम्।।

चैन से कैसे रहेंगे जो सताते माँ तुझे।
हर्षवर्धक भक्त की भयहारिणी गोमातरम्।।

प्रेम से पलती जहाँ, श्री फूलती फलती वहाँ।
निर्बलों में बल अतुल संचारिणी गोमातरम्।।

आईआईटी ने बांस, सरकंडा और गोबर की ईंट से बनाया घर

4 से 8 डिग्री सेल्सियस कम हो सकता है घर के अंदर का तापमान
बांस, गोबर, सरकंडे की मदद से बने इस घर के अंदर का तापमान बाहर के तापमान की तुलना में 4 से 8 डिग्री सेल्सियस कम हो सकता है। उन्होंने बताया कि इस घर की वास्तुकला मॉडल को यूनिवर्सिटी ऑफ पैगोडा इटली की शोधार्थी कंयाता ने बनाया है।

नई दिल्ली (अभिनव उपाध्याय)। भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान (आईआईटी) दिल्ली बांस, सरकंडा, गोबर के सहयोग के साथ बिना किसी तरह के कंक्रीट का प्रयोग कर इकोफ्रेंडली घर बना रहा है। इस अनुसंधान के मुख्य अन्वेषक आईआईटी दिल्ली के सिविल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के प्रो. सुरेश भल्ला ने बताया कि यह प्रयोग कम लागत में अधिक से अधिक देश के लोगों को घर मुहैया कराने में कारगर सिद्ध होगा। हम लोग कम लागत में, भूकंपरोधी, आंधी या तूफानरोधी एवं फायरप्रूफ घर बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। इसके लिए जरूरी सामान जैसे गोबर की ईंट, बांस और सरकंडा बाहर से मंगा रहे हैं। जो लोग गोबर की ईंट और सरकंडा प्रदान कर रहे हैं वह भी इस क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं।

अधिकतम एक लाख तक आ सकती है लागत

प्रो. सुरेश भल्ला ने बताया कि 250 वर्ग फीट में इस तकनीकी से घर बनाना कंक्रीट के घर बनाने से किफायती है। टेक्नोलॉजी ट्रांसफर करने के बाद संबंधित कंपनी इसकी एक अनुमानित कीमत रख सकती है। हमारा प्रयास है कि इस प्रकार के एक बेसिक घर की कीमत एक लाख तक आ सकती है। इसके बनाने की कीमत सरकार एवं सामाजिक कारपोरेट के सहयोग से कम की जा सकती है। साथ ही किसान अपने द्वारा उगाए गए बांस व अपने गोवंश के गोबर से लागत को और कम कर सकते हैं। अभी इसकी कीमत का सटीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। प्रो. भल्ला बताते हैं कि इस अनुसंधान के अंतर्गत शोधार्थी डा. दिवाकर भगत ने पीएचडी की है। पांच एमटेक व पांच बीटेक प्रोजेक्ट भी पूरे हुए हैं।

शिवदर्शन मलिक देते हैं प्रशिक्षण

हरियाणा निवासी आईआईटी दिल्ली को सरकंडा और गोबर की ईंट उपलब्ध कराने वाले शिवदर्शन मलिक इस तरह का **एक मंजिल घर** बनाने के लिए लोगों को प्रशिक्षण भी देते हैं। प्रो. भल्ला की पेटेंटिड तकनीकी से भवन दो अथवा तीन मंजिल तक बनाया जा सकता है। हम लोग **अपने खेत में अपना घर** मुहिम चला रहे हैं। वह बताते हैं कि घर बनाना बहुत मंहगा है, लेकिन किसान चाहे तो वह ऐसा कर सकता है। हम लोगों ने अब तक 600 से अधिक लोगों को इसके लिए प्रशिक्षित किया है। प्रशिक्षण लेने वालों में देश के अलावा विदेशी भी हैं।

दिनेश उपाध्याय (अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख)

अखिल भारतीय गोभक्त महिला सम्मेलन संपन्न

नई दिल्ली। विश्व हिंदू परिषद, गोरक्षा विभाग– ''भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद'', के तत्वावधान में तीन दिवसीय **अखिल भारतीय गोभक्त महिला सम्मेलन** का दिनांक 12 से 14 फरवरी 2026 तक तेहरापंथ भवन, आध्यात्म साधना केन्द्र के पास, छतरपुर, नई दिल्ली में भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। देश के विभिन्न प्रांतों से लगभग 250 गोभक्त महिलाएं एवं गोरक्षा विभाग के केन्द्रीय टोली के पदाधिकारियों व प्रान्त गोरक्षा प्रमुखों की उत्साहपूर्ण सहभागिता ने इस सम्मेलन को एक विराट राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। सम्मेलन का उद्देश्य गोवंश–संरक्षण, गोवंश – संवर्धन तथा गोवंश आधारित सामाजिक– आर्थिक पुनर्जागरण में मातृशक्ति की भूमिका को सशक्त बनाना था।

उद्घाटन सत्र का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार एवं गोमाता पूजन के साथ प्रारम्भ हुआ। विश्व हिन्दू परिषद के सयुंक्त महामंत्री एवं गोरक्षा विभाग के पालक अधिकारी मा. स्थाणुमलयन जी ने संगठन विस्तार, कार्ययोजना निर्माण एवं आगामी लक्ष्यों पर चर्चा की। उन्होंने प्रत्येक जिले एवं प्रखंड स्तर पर महिला गोभक्त टोलियों के गठन का आह्वान किया। तत्पश्चात **गोसम्पदा** पत्रिका के प्रचार–प्रसार प्रमुख डॉ. नरेश शर्मा जी ने गोमाता की वैदिक, शास्त्रीय, सांस्कृतिक, कृषि, औषधीय एवं पर्यावरणीय महत्ता पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय सभ्यता की आत्मा गोसंस्कृति में निहित है तथा गोवंश –आधारित जीवन पद्धति समग्र मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

दूसरे सत्र में गोरक्षा विभाग के अखिल भारतीय सह प्रमुख श्री केशव राजु जी ने अपने उद्बोधन में स्पष्ट कहा कि "गोरक्षा का कार्य तभी होगा जब संगठन सशक्त होगा। यदि संगठन नहीं होगा, लोग संगठित नहीं होंगे, तो गोरक्षा कैसे संभव होगी?" उन्होंने संगठन के सुदृढ़ीकरण पर विशेष बल देते हुए प्रांत, राज्य जिले प्रखंड स्तर पर

टोलियों के व्यापक विस्तार पर चर्चा की। उन्होनें कहा कि सच्चा कार्यकर्ता प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनुकूलता से काम करता है। तत्पश्चात भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद के न्यासी श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी ने "कार्यकर्ता को किस तरह अपने व्यवहार को रखना चाहिए" विषय पर प्रकाश डाला।

अगले सत्र में विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. आलोक जी ने कहा कि भारतीय नारी भारतमाता, दुर्गा, कमला और सरस्वती का स्वरूप है। इतिहास में अनुसूया, गार्गी, जीजाबाई और भगिनी निवेदिता ने समाज को दिशा दी है। आज भी नारी नेतृत्व हर क्षेत्र में सिद्ध है उन्होंने आह्वान किया कि महिलाएँ घर की जिम्मेदारी निभाते हुए गोवंश–संवर्धन को जनआंदोलन बनाएं, पहला ग्रास गौ–माता को अर्पित करें, पॉलिथीन का त्याग करें, गोवंश–तस्करी रोकने के लिए सजग रहें तथा गोबर–गोमूत्र आधारित उत्पादों, सेल्फ हेल्प ग्रुप और मॉडल गौशालाओं के माध्यम से आत्मनिर्भरता बढ़ाएं। गोरक्षा विभाग की उपाध्यक्ष डॉ. माधवी गोस्वामी जी ने गोबर, गोमूत्र, गोदुग्ध, गोदधि एवं घृत से निर्मित पंचगव्य उत्पादों एवं प्राकृतिक सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण की विधि बताई। उन्होंने रासायनिक उत्पादों के दुष्प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए गोवंश–आधारित उत्पादों को सुरक्षित एवं स्वास्थ्यवर्धक विकल्प बताया।

गोरक्षा विभाग के अखिल भारतीय प्रशिक्षण प्रमुख श्री गोपाल भाई सुतारिया जी ने गौशाला प्रबंधन एवं गौकृपा अमृतम तथा गौसेवा के व्यावहारिक पक्षों पर मार्गदर्शन दिया। मुम्बई क्षेत्र की क्षेत्र गोभक्त महिला प्रमुख श्रीमती सुनीता जी देशमुख ने कहा कि संगठित महिलाएं समाज को नई दिशा दे सकती हैं। उन्होंने घर–घर गोवंश– संरक्षण का संदेश पहुँचाने तथा महिला टोलियों के विस्तार पर बल दिया। विश्व हिन्दू परिषद, मात्रृशक्ति की अखिल भारतीय सह संयोजिका श्रीमती सरोज सोनी जी ने पंचपरिवर्तन के अनुकरणीय कार्य पर प्रकाश डाला। गोरक्षा विभाग के महामंत्री श्री श्रीनारायण अग्रवाल जी ने आदर्श गौशाला के प्रबन्धन के लिए विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि गौशाला में गायें तभी स्वस्थ रह कर बच सकती हैं जब उन्हें पर्याप्त पौष्टिक चारा दिया जाये। इसके लिए नैपियर घास का व्यापक स्तर पर उत्पादन किया जाए। तत्पचात गोरक्षा विभाग के अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख मा. दिनेश उपाध्याय जी ने संगठनात्मक, प्रशिक्षणात्मक एवं आर्थिक पक्ष पर प्रकाश डाला।

अंतिम दिन सम्मेलन में आयी हुई महिलाओं ने अपने–अपने अनुभव बताए। तदोपरांत गोरक्षा विभाग के उपाध्यक्ष डा. रामस्वरूप चौहान जी ने महिलाओं द्वारा किए गए प्रश्नों का समाधान बतलाया। कई महिला गौभक्तों ने गोमाता के प्रत्यक्ष चमत्कारों (घटनाओं) से सम्बंधित सच्चे अनुभव भी बतलाए। इसी दौरान गोरक्षा के क्षेत्र में काम कर रही महिलाओं को सम्मानित किया गया। तत्पश्चात काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान संकाय एवं गोरक्षा विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गुरु प्रसाद जी ने गाय–गोवंश से सम्बंधित केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रहीं विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन के दौरान भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्धन परिषद की संगठनात्मक (केन्द्रीय संच टोली) की बैठक भी सम्पन्न हुई, जिसमें अनेक बिन्दुओं पर गहन विमर्श किया गया। तीन दिवसीय सम्मेलन में भी निम्न विषयों पर महत्वपूर्ण चर्चा एवं चिंतन किया गया –

गौविज्ञान एवं पंचगव्य चिकित्सा, जैविक एवं गौआधारित खेती, ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं स्वदेशी उद्योग, देशी नस्ल संरक्षण, गोचर भूमि संरक्षण, अवैध गोहत्या

एवं गौतस्करी की चुनौतियाँ, पर्यावरण संतुलन एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण आदि।

प्रस्तावित चर्चा बिंदु –

सम्मेलन में निम्न विषयों पर राष्ट्रीय स्तर पर संवाद की आवश्यकता व्यक्त की गई –

गोमाता को "राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर" घोषित करने की पहल, गोपाष्टमी को राष्ट्रीय पर्व का स्वरूप, कठोर केंद्रीय गोहत्या निषेध कानून, गौतस्करी को गैर–जमानती अपराध घोषित करना, गौअभयारण्य स्थापना एवं गोचर भूमि संरक्षण हेतु प्राधिकरण, पंचगव्य आधारित अर्थव्यवस्था को राष्ट्रीय नीति में स्थान, शैक्षणिक पाठ्यक्रम में गोसंरक्षण विषय का समावेश, संगठन की वर्तमान गतिविधियों की समीक्षा, प्रांतवार महिला टोलियों की बैठक, सांगठनिक रणनीतियों का निर्माण, आगामी कार्ययोजना निर्धारण पर विस्तृत चर्चा हुई।

अखिल भारतीय विधि प्रमुख एवं क्षेत्रीय गोरक्षा प्रमुख श्री शशांक शेखर ने जयपुर की राष्ट्रीय बैठक में पारित प्रस्ताव का वाचन किया एवं आगामी 27 मई, 2026 को होने वाले बकरीद पर गोहत्या को रोकने हेतु सरकार के विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों को ज्ञापन सौपने के प्रारूप पर चर्चा की गई।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए गोरक्षा विभाग के संरक्षक श्री हुकुमचंद सांवला जी ने गौसंस्कृति को राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना का आधार बताया। उन्होंने कहा कि गाय केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि भारतीय परिवार, कृषि, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण की धुरी है। राष्ट्रीय गोरक्षा प्रमुख श्री दिनेश उपाध्याय जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गाय और नारी दोनों पूजनीय हैं; जब मातृशक्ति गोसेवा का संकल्प लेती है तो समाज में व्यापक परिवर्तन संभव होता है।

यह तीन दिवसीय अखिल भारतीय गोभक्त महिला सम्मेलन मातृशक्ति के संगठन, प्रशिक्षण एवं वैचारिक सुदृढ़ीकरण का महत्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुआ। समस्त केंद्रीय एवं प्रांतीय नेतृत्व के मार्गदर्शन में यह आयोजन अनुकरणीय संगठनात्मक मॉडल के रूप में स्थापित हुआ। सम्मेलन में स्पष्ट किया गया कि गौसंरक्षण केवल भावनात्मक विषय नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय पुनर्जागरण का आधार है।

कार्यक्रम का संयोजन डॉ. नंदिनी भोजराज तथा संचालन डॉ. सुचि वर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं का दायित्व एवं मार्गदर्शन गोरक्षा विभाग के संरक्षक श्री संतराम गोयल जी ने संभाला। उनके विशेष सहयोगी गोरक्षा विभाग के सह गोरक्षा प्रमुख श्री विजेन्द्र तंवर जी रहे। इन्द्रप्रस्थ प्रान्त के गोरक्षा प्रमुख श्री जगवीर गौड़, प्रान्त गोभक्त महिला प्रमुख श्रीमती सिम्मी जैन ने टोली के साथ कार्यक्रम को सुचारू रूप से व्यवस्थित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तत्पश्चात स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति में आभार प्रदर्शन, पूर्णता मंत्र, वन्देमातरम् गीत और विधिवत राष्ट्र एवं गौसंरक्षण संकल्प के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

केशवसृष्टि को मिला पुरस्कार

महाराष्ट्र गौसेवा आयोग ने दिया गौशाला को राज्यस्तरीय पुरस्कार

भाईंदर, (सं.) महाराष्ट्र शासन के पशुसंवर्धन विभाग के तहत महाराष्ट्र गौसेवा आयोग द्वारा वर्ष 2025–26 के लिए **केशवसृष्टि गौशाला को राज्यस्तरीय प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया।** यह सम्मान आयोग के अध्यक्ष शेखर मूंदड़ा, पशुसंवर्धन आयुक्त प्रवीण देवरे (भा.प्र.से.) तथा डॉ. शामराव पाटिल की उपस्थिति में प्रदान किया गया। गौशाला अध्यक्ष देवकीनंदन जिंदल एवं कार्यवाह डॉ. सुशील अग्रवाल ने इसे गौसेवा के प्रति समर्पण, करुणा और निस्वार्थ सेवा का सम्मान

बताया। उल्लेखनीय है कि गौशाला में लगभग 200 देशी गौवंश का संरक्षण किया जा रहा है। यहां स्थापित बायोगैस संयंत्र प्रतिदिन 40–50 घन मीटर गैस का उत्पादन करता है। गौसंवर्धन, वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण के विविध प्रयासों के माध्यम से गौशाला आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर है।

गोवंश काव्य प्रतियोगिता मौसम ने जीती

मुंबई (भास्कर न्यूज)। गुरु नानक खालसा महाविद्यालय, उमा कल्याण ट्रस्ट और भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद के संयुक्त तत्वावधान में गोवंश आधारित प्रतियोगिताओं की श्रृंखला में स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की काव्य प्रतियोगिता का फाइनल गुरु नानक खालसा कॉलेज, माटुंगा (मुंबई) में संपन्न हुआ। इसमें मुंबई और आसपास के 15 कॉलेजों के 42 विद्यार्थियों ने भाग लिया। मौसम यादव (झुनझुनाला कॉलेज) प्रथम, पवनजीत गुप्ता (भवंस कॉलेज) द्वितीय और तनु सिंह (रुइया कॉलेज) तृतीय स्थान पर रहे। महिमा मिश्रा (कीर्ति कॉलेज) और ऐश्वर्या शुक्ला (तिवारी डिग्री कॉलेज) को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाएगा। फाइनल के निर्णायक डॉ. आरएस दुबे, डॉ बीपी सिंह और डॉ. उषा मिश्रा थीं। कवयित्री प्रमिला भारती मुख्य अतिथि थीं। खालसा कॉलेज की प्राचार्या डॉ. रत्ना शर्मा ने आगंतुकों का स्वागत किया। उपप्राचार्य व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. मृगेंद्र राय ने संचालन किया। सरिता शर्मा ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। उमा कल्याण ट्रस्ट के काम से राजीव नौटियाल, अशोक हमराही और राजुल अशोक ने अवगत कराया।

Dr. Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

THE ROLE OF COW DUNG IN REDUCING CHEMICAL FERTILIZER DEPENDENCY

Modern agriculture has achieved remarkable productivity over the past century, yet this success has come at a significant ecological cost. The intensive use of chemical fertilizers, introduced widely during the Green Revolution, has contributed to soil degradation, declining organic matter, groundwater contamination and increasing financial pressure on farmers. In this context, cow dung, often considered an ordinary by-product of livestock rearing, emerges as a valuable organic resource capable of reducing dependency on synthetic fertilizers while promoting sustainable agricultural practices.

Cow dung contains essential macronutrients such as nitrogen, phosphorus and potassium (NPK), along with several micronutrients required for plant growth. Unlike chemical fertilizers, which supply nutrients in concentrated and rapidly soluble forms, cow dung releases nutrients gradually as it decomposes. This slow and steady nutrient release enhances nutrient-use efficiency and reduces the risk of leaching and runoff into nearby water bodies. The organic matter present in cow dung plays a crucial role in improving soil structure by increasing its water-holding capacity, enhancing aeration and supporting root development. Over time, soils treated with organic manure become more resilient and productive, reducing the need for frequent chemical inputs.

An equally significant contribution of cow dung lies in its ability to restore and maintain soil microbial life. Excessive chemical fertilizer application often disturbs the natural microbial balance of the soil, leading to long-term fertility decline. Cow dung, on the contrary, fairly serves as a substrate for beneficial microorganisms that facilitate nutrient cycling and organic matter

decomposition. A thriving microbial ecosystem improves the availability of nutrients to plants and enhances overall soil vitality. This biological enrichment gradually reduces the dependence on synthetic fertilizers, especially when integrated into regular farming practices.

Processing cow dung through composting or vermicomposting further enhances its effectiveness. Composting stabilizes nutrients, eliminates harmful pathogens and converts raw dung into humus-rich manure that strengthens soil fertility. Vermicomposting, involving the use of earthworms, produces nutrient-enriched compost containing growth-promoting substances. Such processed forms of cow dung provide balanced nutrition to crops and can partially substitute chemical fertilizers without compromising yield. In many farming systems, integrated nutrient management practices combining organic manure with reduced chemical inputs have demonstrated sustained productivity along with improved soil health.

The environmental benefits of using cow dung are equally noteworthy. Chemical fertilizers are major contributors to soil acidification and eutrophication of water bodies, which disrupt aquatic ecosystems. By contrast, organic manure improves soil organic carbon levels, contributing to carbon sequestration and climate change mitigation. When cow dung is utilized in biogas plants, it produces renewable energy in the form of methane for household or agricultural use and the residual slurry serves as an effective organic fertilizer. This integrated approach not only reduces reliance on fossil fuels but also strengthens the circular economy within rural communities. However, proper management remains essential to prevent greenhouse gas emissions from unmanaged waste.

Economically, cow dung offers a cost-effective alternative for small and marginal farmers. Chemical fertilizers represent a significant portion of agricultural expenditure and their rising prices can affect farm profitability. Since cattle's rearing remains integral to many rural households, cow dung is readily available and inexpensive. Its utilization reduces input costs and enhances long-term soil productivity. Moreover, composting and biogas initiatives generate rural employment and encourage community participation in sustainable practices.

While cow dung alone may not completely replace chemical fertilizers in large-scale intensive agriculture, its systematic integration can substantially lower dependency on synthetic inputs. Over successive cropping cycles, improved soil structure, enhanced microbial activity and increased organic matter reduce the quantity of external fertilizers required. The transition toward such balanced practices demands awareness, scientific guidance and policy support to encourage farmers to adopt organic alternatives responsibly.

Conclusively, cow dung represents more than an agricultural by-product; it embodies a sustainable solution rooted in ecological wisdom. By enriching soil, supporting biodiversity, reducing environmental harm and strengthening rural economies, it plays a meaningful role in diminishing chemical fertilizer dependency. In an era increasingly defined by environmental challenges and the urgent need for sustainable food systems, the thoughtful utilization of cow dung offers a practical pathway toward restoring harmony between agriculture and nature.

Dr. Aastha Pathak

COWS on URBAN ROADS

Like many other cities around the world, Indian urban communities have large numbers of stray dogs living alongside their human inhabitants. Thousands of road accidents every month caused due to cows on roads, block traffic and spread disease. The Government has long been aware of the many issues caused by cows roaming free on busy city roads. Stray cows have been a part of Indian urban life for as long as anyone can remember, but they've become increasingly problematic in recent years, with the development of infrastructure and the increase in the number of cars driving on Indian roads. Urban cows don't fear traffic, so it's not unusual to see them loitering, in the middle of the road, unperturbed by honking or drivers trying to scare them away. Cow slaughter is banned throughout most of the nation, so when cows and bulls outlive their usefulness and or are considered too much of a financial burden, their human owners just set them loose on the streets. This has been going on since forever, and today, the stray cow population in India is in the millions and growing at a rapid pace. Cows can be seen roaming on busy roads in large cities like New Delhi all through the day,

often causing accidents and blocking traffic, but they are most dangerous at night. Vehicles moving at high speed have a tough time spotting these animals in time, and crashes sometimes result in the loss of both human and animal lives. When cow's live on street they usually get into street accidents. While most of them may look healthy, they are actually diseased, or at least carrying some of the most dangerous food-borne and waterborne pathogens in the world. They mainly feed on garbage, and evidence shows that their milk as well as the waste they produce are full of antibiotics, hormones and heavy metals, some of which can cause temporary illnesses in humans, while others can lead to death.Cow catchers are currently the only way Indian cities deal with stray cows. Sometimes referred to as "urban cowboys", these men only rely on rope lassos and brute strength to catch cows, load them on trucks and take them to one of the overcrowded cow shelters, or "gaushalas". The only time when they are allowed to use stun guns, is when they are accompanied by a veterinarian, which doesn't happen very often. But not only is catching stray cows hard and dangerous work – as they tend to kick and buck violently when threatened – cow catchers also have to deal with the human population. Frustrated drivers frequently turn to violence if the catchers block traffic for too long, trying to remove the cows, illegal dairy owners are even worse, and even Hindu bystanders pelt them with rocks in an attempt to get them to leave the sacred animals alone. Cow catchers are struggling to rid the streets of stray cows, but soon they may not have where to take them. Rajendra Singh Shekhawat, who runs the biggest gaushala in New Delhi, says that he already nearing full capacity, and all the other shelters are facing the same problem. To make matters worse, the number of abandoned cows is increasing, as machines and tractors take over their jobs District administrations are constantly announcing campaigns to rid cities of stray cows, but with an estimated 5 million animals still roaming through the streets, no one knows how exactly they plan to do that, or where they plan to take them. For saving cow's live as well as humans live on roads it is necessary to take major steps for the benefits of street cows and better movement of vehicles on roads.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर – 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank

...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI

BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

होलिका दहन कार्यक्रम संपन्न

नई दिल्ली स्थित विश्व हिन्दू परिषद–केन्द्रीय कार्यालय, हनुमान मंदिर में गत 2 मार्च की रात्रि के दिव्य वातावरण में **होलिका दहन कार्यक्रम** हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विहिप महामंत्री मा. बजरंग लाल जी बागड़ा एवं सह संगठन महामंत्री मा. विनायक राव जी ने पूजन संपन्न कराया। — **संपादक**

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 मार्च, 2026

गोभक्त महिला सम्मेलन का विहंगम दृश्य

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक